c. वि 1) sidere, tabescere, perire. MAH. 4.1953.: सीदन्ति मम प्राणा मनो विह्वलती 'व मे· 2) moerore, dolore affligi, conturbari, perturbari, consternari, deliquium animi pati, animo linqui. MAH. 3.448.: तं विषीदन्तम् आज्ञाय ... अमारयत्; 3075.: व्यसने त्वम् महाराज न विषीदितुम् अर्हसि; R. Schl. II.77. 8.: विष्टनन् विषसाद ह; 107.19.: मा विषीद; BH. 1.28. — विषस (v. gr. 607.) perturbatus, consternatus. R. Schl. I.40.24.48.25.: विषसवदन; UR. 43.3.: उर्वशी सह साख्या विषस्णा· — *Caus.* moerore, dolore afficere, conturbare, consternare. MAH. 3.3076. 2.718. R. Schl. II.7.18.53.31. *Vid.* विषाद, विषादिन्·

c. सम् *i. q. simpl.* MAN. 4.33.: संसीदन् क्षुधा·

2. सद् 1. et 10. *P.* सदामि, सादयामि ire. (Slav. *chod-i-ti* ire, *is-chod* ἔξοδος (v. gr. comp. *255. m.*); gr. ὁδός; fortasse goth. *sandja* mitto, nostrum *sende* = Caus. insertâ nasali, servato *d* propter antecedentem liquidam, v. gr. comp. 90.)

c. आ 1) adire, aggredi, appropinquare. N. 10.18.: आससाद सभोद्देशे विकोशङ्ग खड्गम्; 13.45.: पुरम् आसादयन्; 17.4.: इयम् आसादिता बाला तव पुत्रनिवेशने; H. 1.15.: पथि गच्छन्तम् आसेदुः· Hostiliter aggredi. H. 4.2.: माम् आसाद्य उद्बुद्धे· — आसन्न aggressus, qui accessit, appropinquavit, propinquus. HIT. 38.22.: जलासन्नतरुः; 68.11.: अत्रा "सन्ने सरसि ... स्नाति; *pass.* quem accessit aliquis, *inde* indutus, praeditus (v. इ praef. उप, अनु). NALOD. 1.37.: स्वमायासन्न· 2) obtinere. MAH. 3.10472.: तासु पुत्रम् महीपतिः कश्चिन् ना "सादयामास·

c. आ praef. अभि obtinere. MAH. 3.17101.

c. आ praef. सम् adire, aggredi, appropinquare. N. 23.25.: समासाद्य पुत्रौ; MAH. 2.553.: कृष्णान् द्वारवत्यां समासदत्; SA. 5.5.

सदन *n.* (r. सद् ire s. अन) domus, palatium. DR. 2.4.

सदस् *n.* (r. सद् s. अस्) coetus, conventus. UP. 76. (Gr. ἕδος, v. gr. comp. 128.)

सदा (a stirpe demonstr. स s. दा) semper.

सदागति *f.* (semper itionem habens *BAH.* e सदा semper et गति itio) ventus.

सदातन (*f.* ई, a सदा s. तन) sempiternus. AM.

सदृश (*f.* ई, e स q. v. et दृश, cf. gr. 287.) similis, *c. gen.* N. 1.27. 17.5. *c. instr.* BH. 16.15.

सद्मन् *n.* (r. सद् ire s. मन्) domus. (*Cf.* सदन.)

सद्यस् (ut mihi videtur, e stirpe demonstr. स et द्यस्, quod correptum esse censeo ex obsoleto दिवस् dies, v. दिवस et cf. अद्य hodie) statim, momento. UR. 90.9.

सन् 1. *P.* सनामि (सम्भक्तौ) colere, venerari, amare. 8. *P. A.* सनोमि सन्वे (दाने) dare. *In dial. Véd.* 1. et 8. adipisci, obtinere. RIGV. 73.5.: सनेम वाजं समिथेषु अर्यः «obtineamus in certaminibus cibum inimici»; 5.9.: सनेद् इमं वाजम् इन्द्रः «Indras fruatur hoc cibo»; 17.6.: तयोरिद् अवसा वयं सनेम «eorum auxilio nos *divitiis* fruamur»; 100.19.: अपरिह्वृताः सनुयाम वाजम् «non afflicti fruamur cibo».

सना *Adv.* (ut mihi videtur, ex stirpe pronominali स q. v. s. ना, sicut विना a वि) semper. (Cf. anglo-sax. *sin* id. praesertim in initio compp.; germ. vet. *sin* id., v. Graff I. 25., goth. *sin* τοῦ *sin-teins*; nisi pertinent ad सम्, lat. *sem-per.*)

सनातन (*fem.* ई, a praec. suff. तन) sempiternus, aeternus, perpetuus. BR. 2.4. M. 7.

सनाथ (*BAH.* e स cum et नाथ) conjunctus, praeditus. UR. 19.4. *infr.* 54.6. *infr.* 62.11.

सन्तति *f.* (r. तन् praef. सम् s. ति) *i. q. seq.* MAH. 3. 8306.

सन्तान *m. n.* (r. तन् extendere praef. सम् s. अ) progenies, stirps, posteritas. BR. 3.10. SA. 1.12.5.88.

सन्ताप *m.* (r. तप् urere praef. सम् s. अ) 1) aestus, calor. 2) moeror, sollicitudo. BR. 2.1. SA. 1.4.

सन्तोष *m.* (r. तुष् praef. सम् s. अ) animus contentus, *Zufriedenheit.* HIT. 45.14.

सन्दिग्ध v. दिह् praef. सम्·

सन्देह *m.* (r. दिह् polluere praef. सम् s. अ) dubium, dubitatio. BR. 2.20.